10. आधुनिक कार्य-पद्धतियों का विकास एवं उन्हें अपनाना।
11. लोक-सेवाओं की कार्यक्षमता बढ़ाना और उचित प्रबन्ध करना।
12. पूँजी निवेश का उपयोग राष्ट्रीय हित में करना।
13. अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का सहयोग प्राप्त करना तथा विश्व में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करना।
14. विकास कार्यों में सहभागिता को प्रोत्साहन देना, आदि।

विकास कार्य करना आसान कार्य नहीं है। प्रत्येक विकासशील देश के लिए विकास आवश्यक है किन्तु इसे सम्पन्न करने में कुछ समस्याएँ आती हैं। सर्वप्रथम समस्या आर्थिक संसाधनों की है। विकास के लिए धन की कमी और कैसे प्राप्त करना। द्वितीय, देश में राजनीतिक स्थिरता का अभाव। विकास कार्य करने के लिए सर्वप्रथम आवश्यक है कि देश में राजनीतिक स्थिरता और शान्ति का होना अनिवार्य है। तीसरे, विकास कार्य में जनसहभागिता का अभाव देखने को मिलता है। चौथे, विकास कार्य के लिए व्यवस्थित तथा विकास प्रशासन की आवश्यकता होती है। प्रशासनिक व्यवस्था की अनिश्चयात्मकता एक अन्य समस्या है। पाँचवीं समस्या है उचित तथा सुव्यवस्थित शिक्षा का अभाव। छठवीं समस्या जो विकासशील देशों में देखने को मिलती है—रूढ़िवादी परम्परागत समाज। अन्तिम, आधुनिक तकनीकी ज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवीन प्रशासनिक कार्य-पद्धति, आदि के अभाव में विकास कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

उपरोक्त समस्याओं के अतिरिक्त विकासशील देशों की चार समस्याएँ जो अंग्रेजी के 'P' शब्द से प्रारम्भ होती हैं—Proliferation, Poverty, Pollution and Population.

विकास एक अनवरत प्रक्रिया है। विकास का कार्य शान्तिपूर्ण वातावरण में सम्भव है। विकास के लिए राजनीतिक स्थिरता, प्रशासनिक कुशलता और स्थिरता, उचित सांस्कृतिक और नियोजन व्यवस्था, जनसहभागिता, सुदृढ़ आर्थिक नीति, अनुकूल आर्थिक, सामाजिक-राजनीतिक पर्यावरण, आदि।

विकास प्रशासन की अवधारणा
[CONCEPT OF DEVELOPMENT ADMINISTRATION]

तुलनात्मक प्रशासन की भाँति विकास प्रशासन भी लोक प्रशासन के विकास का एक नया आयाम है। विकास प्रशासन एक गतिशील और परिवर्तनशील अवधारणा है जो समाज में आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन के लिए प्रयत्नशील है। इसमें विकास के कार्यों को प्राथमिकता दी जाती है। आज विश्व के देश विकास कार्यों में लगे हैं और उन कार्यों को सुचारु रूप से लागू करने के लिए विकास प्रशासन की आवश्यकता है। विकास प्रशासन को प्रशासन की एक नवीन अवधारणा कहा जा सकता है जिसका जन्म एवं विकास अनेक तत्वों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है। विकास प्रशासन की अवधारणा द्वितीय महायुद्ध के बाद की परिस्थितियों ने लोक प्रशासन के परम्परागत सिद्धान्तों की अपर्याप्तता को देखते हुए इस अवधारणा को जन्म दिया। तृतीय विश्व के अन्तर्गत आने वाले अफ्रीका, एशिया और लेटिन अमेरिका के देश विकास कार्य में लगे हुए हैं इसलिए इन देशों को विकासशील देशों के नाम से जाना जाता है जिनका प्रमुख विकासात्मक कार्य राष्ट्र निर्माण और सामाजिक-आर्थिक प्रगति है। इसका सम्बन्ध विकासशील देशों की सरकार के प्रशासन से है। सर्वप्रथम एडवर्ड डब्ल्यू. वीडनर ने विकास प्रशासन की अवधारणा का प्रतिपादन किया। बाद में प्रो. रिग्स, पालोम्बरा, वाटसन आदि विद्वानों

ने इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। एक अनुशासन के रूप में विकास प्रशासन की अवधारणा एक अमरीकी उपज है जिसके विविध रूप अफ्रीका, लेटिन अमेरिका और एशिया के देशों में देखने को मिलते हैं। इन देशों में विकास प्रशासन का महत्व इतना हो गया है कि यहाँ इसको प्रशासनिक संरचनाओं, संगठनों, नीतियों, योजनाओं, कार्यों, परियोजनाओं आदि को विकासात्मक उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के रूप में जाना गया है। यह प्रशासन विकासशील देशों का प्रशासन है जो सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक तन्त्र के विकास में लगा हुआ है। अतः विकास की इस अवधारणा ने परम्परागत प्रशासन को विकासात्मक प्रशासन की ओर उन्मुख कर दिया है।

अर्थ (Meaning)

विकास प्रशासन की रचना का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि लोक प्रशासन सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न पारिस्थितिकीय विन्यासों में किस प्रकार कार्य करता है और परिवर्तित भी होता है। इस विस्तृत परिप्रेक्ष्य में 'विकास प्रशासन' शब्द की अनेक व्याख्याएँ की गयी हैं। शब्दकोष में 'विकास' शब्द का अर्थ उद्देश्यमूलक है, क्योंकि इसका उल्लेख प्रायः उच्चतर, पूर्णतर और अधिकतर परिपक्वतापूर्ण स्थिति की ओर बढ़ना है। 'विकास' को मन की एक स्थिति तथा 'एक दिशा' के रूप में भी देखा गया है। एक निश्चित लक्ष्य की अपेक्षा विकास एक विशिष्ट दिशा में परिवर्तन की गति है। इसके अतिरिक्त विकास को परिवर्तन के उस पक्ष के रूप में भी देखा गया है जो नियोजित तथा अभीष्ट हो और प्रशासकीय कार्यों से निर्देशित हों।

'विकास प्रशासन' दो शब्दों के योग से बना है—विकास और प्रशासन। 'विकास' शब्द का अर्थ होता है निरन्तर आगे बढ़ना और 'प्रशासन' का अर्थ है सेवा करना। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि विकास प्रशासन में जनता की सेवा के लिए विकास कार्यों को करना निहित है। लोक प्रशासन में विकास का तात्पर्य किसी सामाजिक संरचना का प्रगति की ओर बढ़ना है। इस प्रकार समाज में प्रगति की दिशा में जो भी परिवर्तन होते हैं उन्हें विकास की संज्ञा दी जाती है। विकास प्रशासन का आज विशेष महत्व है। इस शब्द को सबसे पहले 1955 में भारतीय विद्वान यू. एल. गोस्वामी ने प्रयोग किया था। परन्तु इसको औपचारिक मान्यता उस समय प्रदान की गयी जब Comparative Administration Group of the American Society for Public Administration तथा Committee on Comparative Politics of the Social Science Research Council of the U. S. A. ने इसके बौद्धिक आधार का निर्माण किया। तब से विकास प्रशासन की व्याख्याएँ और परिभाषाएँ बतायी जाती रही हैं।

परिभाषा (Definition)—विद्वानों द्वारा विकास प्रशासन की निम्नलिखित परिभाषाएँ दी गयी हैं :

1. **प्रो. ए. वीडनर** के अनुसार, "विकास प्रशासन राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रगति के लिए संगठन का मार्गदर्शन करता है। यह मुख्य रूप से एक कार्योन्मुख एवं लक्ष्योन्मुख प्रशासनिक प्रणाली पर जोर देता है।"
2. **प्रो. रिग्स** के अनुसार, "विकास प्रशासन का सम्बन्ध विकास कार्यक्रमों के प्रशासन, बड़े संगठन विशेषकर सरकार की प्रणालियों, विकास लक्ष्यों की उपलब्धि के लिए नीतियों और योजनाओं को क्रियान्वित करने से है।"
3. **डोनाल्ड सी. स्टोन** का कहना है कि "विकास प्रशासन निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संयुक्त प्रयास के रूप में सभी तत्वों और साधनों (मानवीय और भौतिक) का

सम्मिश्रण है। इसका लक्ष्य निर्धारित समयक्रम के अन्तर्गत विकास के पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति है।"

4. **जॉन डी. मॉण्टगोमरी** ने कहा है कि "विकास प्रशासन का तात्पर्य अर्थव्यवस्था और कुछ हद तक सामाजिक सेवाओं में नियोजित ढंग से परिवर्तन लाना है।"
5. **वी. जगन्नाथन** के अनुसार, "विकास प्रशासन वह प्रक्रिया है जो पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु क्रिया प्रेरित और अभिमुख होती है। इसके अन्तर्गत नीति, योजना, कार्यक्रम, परियोजनाएँ आदि सभी आती हैं।"
6. **फेनसोड** ने विकास प्रशासन की परिभाषा देते हुए कहा है कि "विकास प्रशासन नवीन मूल्यों को लाने वाला है.........इसमें वे सभी नये कार्य सम्मिलित होते हैं जो विकासशील देशों ने आधुनिकीकरण तथा औद्योगीकरण के मार्ग पर चलने के लिए अपने हाथों में लिये हैं। साधारणतया विकास प्रशासन में संगठन और साधन सम्मिलित हैं जो नियोजन, आर्थिक विकास तथा राष्ट्रीय आय का प्रसार करने के लिए साधनों को जुटाने और बाँटने के लिए स्थापित किये जाते हैं।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से विकास प्रशासन की संकुचित और विस्तृत दोनों ही विचारधाराएँ स्पष्ट होती हैं। फेनसाड की परिभाषा संकुचित है तो वीडनर और रिग्स की परिभाषा विस्तृत है। विकास प्रशासन में भिन्नता के बावजूद भी सभी विद्वान इस मत से सहमत हैं कि यह लक्ष्योन्मुखी और कार्योन्मुखी है। सामान्यतया विकास प्रशासन को एक निश्चित और निर्धारित कार्यक्रम की पूर्ति के लिए अपनाया जाता है, न कि प्रतिदिन के प्रशासन को कार्यान्वित करने के लिए। परिभाषाओं के उपर्युक्त विश्लेषण के पश्चात् विकास प्रशासन के सम्बन्ध में निम्नलिखित तत्व उभरकर सामने आते हैं :

1. विकास प्रशासन आगे बढ़ने की ओर अग्रसर होने की प्रक्रिया है।
2. विकास प्रशासन गतिशील और निरन्तर प्रक्रिया है।
3. निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विकास प्रशासन संयुक्त प्रयास है।
4. तीसरी दुनिया की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने का यह साधन है।
5. विकास प्रशासन केवल विकास का प्रशासन ही नहीं अपितु वह स्वयं में प्रशासन का विकास भी है।
6. यह कार्योन्मुखी और लक्ष्योन्मुखी भी है।

उद्देश्य (Aims)—आमतौर से विकास प्रशासन का प्रमुख उद्देश्य विकासशील देशों का सामाजिक-आर्थिक विकास करना है। अध्ययन की दृष्टि से इसके उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. विकास सम्बन्धी नीतियों और लक्ष्यों का सूत्रीकरण करना।
2. कार्यक्रम और परियोजना का प्रबन्ध करना।
3. प्रशासनिक संगठन और प्रक्रिया का पुनर्गठन करना।
4. विकास कार्यों में जनता की सहभागिता प्राप्त करने का प्रयास करना।
5. सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक संरचना की प्रगति करना।
6. परिणामों का मूल्यांकन करना।
7. आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी साधनों का प्रयोग करना।

इन उद्देश्यों की प्राप्ति में राजस्व, कानून और व्यवस्था तथा विकास अभिकरण सहयोग प्रदान करते हैं। इनकी सहायता से प्रत्येक विकासशील देश उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। यहाँ यह स्मरणीय है कि विकास प्रशासन में सर्वोच्च प्राथमिकता सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में विकास को दी जाती है।

विशेषताएँ (Features)

विकास प्रशासन की अवधारणा का श्रेय अमेरिकन विचारकों को जाता है। एडवर्ड वीडनर, जो इस क्षेत्र में अग्रज हैं जिन्होंने विकास प्रशासन को प्रक्रियान्मुख और लक्ष्योन्मुख प्रशासनिक तन्त्र के रूप में माना है। दूसरी ओर प्रो. रिग्स के अनुसार विकास प्रशासन के अन्तर्गत प्रशासनिक समस्याएँ और सरकारी सुधार दोनों ही आते हैं। किसी भी प्रशासनिक व्यवस्था की क्षमता बढ़ाने और विकास के लक्ष्यों को कुशलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए नियोजित विकास की प्रक्रिया अपनायी जाती है। तथ्यों की दृष्टि से विकास प्रशासन योजना, नीति, कार्यक्रम तथा परियोजना से सम्बन्ध रखता है। अवधारणा रूप से विकास प्रशासन का अर्थ न केवल जनता के लिए प्रशासन है परन्तु यह जनता के साथ कार्य करने वाला प्रशासन है। विकास प्रशासन सरकार का कार्यात्मक पहलू है, जिसका तात्पर्य मरकार द्वारा जनकल्याण तथा जनजीवन को व्यवस्थित करने के लिए किये गये प्रयासों से है। सामान्यतः विकास प्रशासन की विशेषताओं का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है :

1. **परिवर्तनोन्मुखी**—विकास प्रशासन का केन्द्र-बिन्दु सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवर्तन है। इसकी यही विशेषता इसे परम्परागत प्रशासन से अलग कर देती है। विकासशील देशों में प्रशासन को निरन्तर परिवर्तनों के दौर से गुजरना पड़ता है। इस प्रकार परिवर्तनशीलता विकास प्रशासन की बहुमूल्य पूँजी है जिसके सहारे यह सक्रिय बना रहता है। जहाँ प्रशासन स्थिर और शिथिल हुआ, वहाँ प्रशासनिक विकास की सम्भावनाएँ भी स्थिर एवं शिथिल पड़ जाती हैं।

2. **विकासात्मक प्रकृति**—फेनसोड ने ठीक ही कहा है कि विकास प्रशासन नवीन सुधारों तथा अभिनवकरणों पर निर्भर करता है। इसकी प्रकृति विकासात्मक कार्यक्रमों को लेकर चलने की है। एक विकासशील राष्ट्र में प्रशासन की सफलता उन सुधारों तथा अभिनवकरणों पर निर्भर करती है जो प्रशासन में प्रचलित दोषों को दूर करने के लिए अपनाये जाते हैं। प्रशासनिक सफलता से तात्पर्य प्रशासन के विकास से है, तथा प्रशासन के विकास का तात्पर्य जनसाधारण के अधिकतम कल्याण तथा विकासात्मक प्रवृत्ति से है। इसका प्रमुख उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से पिछड़े समाज का विकास करना है। इस प्रकार विकास प्रशासन की प्रकृति विकासात्मक कार्यों और उद्देश्यों पर आधारित होती है।

3. **प्रजातान्त्रिक मूल्यों से सम्बन्धित**—विकास प्रशासन की एक अन्य विशेषता यह है कि प्रशासन प्रजातान्त्रिक मूल्यों से सम्बद्ध होता है, क्योंकि इसमें मानव अधिकारों और मूल्यों के प्रति सम्मान, जनहित का उद्देश्य तथा उत्तरदायित्व की भावना निहित रहती है। चूँकि विकास प्रशासन का सम्बन्ध सरकारी प्रशासन द्वारा किये जाने वाले प्रयासों से है और सरकारी प्रयास जनकल्याण और प्रजातान्त्रिक मूल्यों से जुड़े रहते हैं, अतः इसे प्रजातान्त्रिक मूल्यों से अलग नहीं किया जा सकता है। वर्तमान कल्याणकारी राज्य में जनकल्याण की जो नवीन योजनाएँ चलायी जाती हैं, उन कार्यक्रमों के उद्देश्यों को पूरा करने में विकास प्रशासन की भूमिका अहम् होती है।

4. **आधुनिकीकरण**—विकासशील देशों के लिए आधुनिक दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक हो गया है। इसमें परिवर्तन और नवीन दृष्टिकोण जैसे कार्य अवश्यम्भावी हो जाते

हैं। देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और औद्योगिक क्षेत्रों में आधुनिकीकरण के लिए विकास प्रशासन प्रयत्नशील रहता है। विकास प्रशासन को इन नवीन उद्देश्यों को प्राप्त करने योग्य अपने को बनाना पड़ता है। इसके लिए प्रशासनिक आधुनिकीकरण के लिए विकास प्रशासन विकसित देशों से मापदण्ड प्राप्त करता है। नवीन दृष्टिकोण, तकनीकी का विकास प्रशासनिक आधुनिकीकरण में सहायक सिद्ध होते हैं। आधुनिकीकरण के लिए विकास प्रशासन को सुदृढ़ एवं लक्ष्योन्मुखी बनाया जाता है।

5. **प्रशासनिक कार्यकुशलता**—कुशलता प्रशासन की सफलता की कुंजी है। विकास प्रशासन में प्रशासनिक कुशलता को इसलिए महत्व दिया जाता है क्योंकि इसके अभाव में विकास के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करना सम्भव नहीं है। विकास प्रशासन के लिए जो नीतियाँ और योजनाएँ बनायी जाती हैं तथा जो लक्ष्य निर्धारित किये जाते हैं उन्हें कम से कम समय और लागत में कुशलतम ढंग से प्राप्त कर लेना प्रशासनिक कार्यकुशलता है। विकास प्रशासन इस बात के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है कि प्रशासनिक विकास के माध्यम से प्रशासन की कार्यकुशलता में वृद्धि कैसे की जाय।

6. **जन-आकांक्षाओं की पूर्ति**—विकास प्रशासन सदैव जन-आकांक्षाओं की पूर्ति और नागरिक सेवाओं के प्रति जागरूक एवं प्रयत्नशील रहता है। जनता की इच्छाओं की पूर्ति देश के राजनीतिक और प्रशासनिक विकास को प्रभावित करती है। विकास के समस्त कार्यक्रम जनहित की ओर ध्यान में रखकर जनता की सुविधाओं के लिए लागू किये जाते हैं। आज के युग में आधुनिक राज्य प्रजातान्त्रिक राज्य होने के कारण विश्व के अधिकांश देश यह बताने का प्रयास करते हैं कि हमारे देश का प्रशासन जनता के लिए, जनता के द्वारा और जनता का प्रशासन है। अतः वे निरन्तर जनता के हितों के लिए विकास की योजनाओं को लागू करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

7. **आर्थिक विकास**—विकास एक व्यापक प्रक्रिया है इसके अन्तर्गत अनेक बातों का समावेश होता है। किन्तु विकास में आर्थिक विकास का अधिक महत्व रहता है। उसे प्रशासनिक विकास के साथ-साथ आर्थिक विकास सम्बन्धी कार्यक्रम विकास प्रशासन के सहयोग से ही लागू किये जाते हैं। बिना ठोस एवं मजबूत आर्थिक दृष्टि से विकसित हुए बिना कोई भी देश शक्तिशाली नहीं बन सकता। देश को अपने अस्तित्व के लिए आर्थिक सम्पन्न बनना आवश्यक है। इसलिए विकास प्रशासन ऐसे प्रशासनिक संगठन की रचना करता है जो देश की आर्थिक प्रगति को सम्भव बनाता है तथा आर्थिक विकास के लिए मार्ग प्रस्तुत करता है। वस्तुतः जब देश में परिवर्तन, आधुनिकीकरण, नवीनीकरण, तकनीकीकरण तथा मशीनीकरण होने लगता है तो बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता होती है। आधुनिकीकरण आर्थिक योजनाओं को लागू करना वित्त के अभाव में सम्भव नहीं हो पाता। फलस्वरूप धन प्राप्त करने के लिए आर्थिक विकास की योजनाएँ प्रारम्भ करनी पड़ती हैं और इसके लिए विकास प्रशासन महत्वपूर्ण साधन बन जाता है। जिन देशों में विकास प्रशासन के माध्यम से आर्थिक विकास के कार्यक्रम नियोजित ढंग से नहीं चलते उन देशों की चालू योजनाएँ वित्त के अभाव में ठप्प पड़ जाती हैं और देश की अर्थ-व्यवस्था चौपट हो जाती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि देश के लिए आर्थिक विकास की योजनाएँ सर्वाधिक महत्व रखती हैं और किसी भी आर्थिक विकास की योजना के लिए विकास प्रशासन सर्वाधिक महत्व रखता है।

8. **नौकरशाही का भय**—विकासशील और विकसित देशों में विकास कार्यक्रम की अनेक योजनाएँ संचालित होती रहती हैं। प्रत्येक नवीन योजना, कार्यक्रम प्रशासन पर बढ़ता

हुआ एक नया उत्तरदायित्व है, एक नवीन शक्ति है। नवीन कार्यों और योजनाओं को लागू करने के लिए जो नवीन क्षेत्राधिकार विकास प्रशासन के हाथ में आता है, उससे अधिकारियों द्वारा अपनी शक्तियों के दुरुपयोग की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं। चूँकि विकास कार्यक्रमों को लागू करने का कार्य नौकरशाही पर होता है इसलिए लालफीताशाही की जड़ें मजबूत होने लगती हैं। शक्तियों का दुरुपयोग मनमाने ढंग से करने लगते हैं। अतः विकास प्रशासन में नौकरशाही के भय की सम्भावना अधिक बनी रहती है।

9. **परिणामोन्मुखी**—मोहित भट्टाचार्य के अनुसार परिणामोन्मुखी होना विकास प्रशासन की प्रमुख विशेषता है। इसमें विकास के कार्यक्रमों को निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत लागू करना होता है तथा अच्छे परिणाम लाने का प्रयास भी किया जाता है। विकास प्रशासन में केवल इस बात पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया जाता है कि क्या किया जा रहा है बल्कि इस बात पर भी ध्यान दिया जाता है कि उसके क्या परिणाम सामने आये हैं। इसकी क्रियान्वयता का सीधा सम्बन्ध उत्पादकता से होता है।

10. **अन्य**—विकास प्रशासन समयोन्मुखी, जनसहभागिता, कार्यकुशलता, नियोजन पर बल, पर्यावरण से प्रभावित वातावरण, राजनीतिक प्रक्रिया के साथ सम्बद्धता, तुलनात्मक लोक प्रशासन से सम्बद्धता आदि विशेषताएँ भी पायी जाती हैं।

विकास प्रशासन के साधन—प्रशासन अपने कार्यों को सम्पन्न करने के लिए कुछ साधनों का प्रयोग करता है। प्रशासन चाहे लोक हो या निजी, निर्धारित साधनों के द्वारा ही अपने उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयास करते हैं। विकास प्रशासन के साधन निम्नलिखित हैं :

1. **प्रशासनिक तन्त्र**—प्रत्येक प्रशासन के समान विकास प्रशासन भी अपने कार्यों का सम्पादन प्रशासनिक तन्त्र द्वारा करता है। इस प्रशासनिक तन्त्र द्वारा आदेश, नियन्त्रण, समन्वय, पर्यवेक्षण आदि कार्य अधिकारियों द्वारा किये जाते हैं तथा कर्मचारियों द्वारा इनके निर्देशों का पालन किया जाता है।

2. **राजनैतिक संगठन**—राजनीतिक दल विकास कार्यक्रमों को समर्थन देने के लिए लोगों को तैयार करते हैं और सामाजिक संघर्षों का समाधान करते हैं, साथ में विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं इसलिए संगठन को विकास प्रशासन का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है।

3. **ऐच्छिक संस्थाएँ**— परिवर्तनशील समाजों में हमेशा जनता और सरकारी तन्त्र के बीच अन्तर देखने को मिलता है। विकास की प्रक्रिया को तेजी से आगे बढ़ाने के लिए इसी रिक्त स्थान को भरा जाना आवश्यक है। ऐच्छिक संस्थाएँ इसी रिक्त स्थान को भरने में बहुत ही निर्णायक और अहम् भूमिका निभाती हैं। प्रेरणा का उच्चतर संगठन और संगठन द्वारा अपनाये जाने वाले मार्ग में लचीलापन तथा उद्देश्यों के प्रति वचनबद्धता आदि इन संस्थाओं को विकास कार्य सँभालने के योग्य साधन बनाते हैं।

4. **जनसंगठन**—विकास प्रशासन विकास कार्यक्रमों में जनसहभागिता पद्धति पर बल देता है। इसके लिए निर्णय, निर्माण तथा निर्णय के क्रियान्वयन में जनप्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाता है। जनसहभागिता के अभाव में कार्यक्रमों के क्रियान्वयन तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति अत्यन्त कठिन है। इस प्रकार विकास प्रशासन जनता तथा प्रशासन को निकट लाने पर बल देता है।

प्रकृति (Nature)—अन्य सामाजिक विषयों की भाँति विकास प्रशासन की प्रकृति भी समाज से सम्बन्धित विषय है। विकास प्रशासन चूँकि गतिशील परिवर्तनशील अवधारणा है

इसलिए समाज में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन लाना इसका प्रमुख लक्ष्य होता है। परिवर्तनशील होने के कारण विकास का अध्ययन भी समयानुसार परिवर्तनशील होता है। आज विकास प्रशासन की जो प्रकृति है वह वर्ष 1960 और 1970 के दशक जैसी नहीं है। पहले की तुलना में विकास प्रशासन का क्षेत्र और महत्व आज बढ़ गया है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् विकास की अवधारणा में परिवर्तन आया है तथा समस्याओं के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है। प्रगति के लिए समय के साथ चलना आवश्यक होता है। प्रत्येक देश समय के अनुकूल की आर्थिक-सामाजिक विकास हेतु नवीन प्रबन्धकीय तकनीकों को अपनाता है। अन्तर्राष्ट्रीयता के युग में आत्मनिर्भरता बढ़ गयी और देश आर्थिक-सामाजिक विकास के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हैं। संक्षेप में, विकासशील देश परम्परागत से आधुनिकवाद की ओर अग्रसर हो रहे हैं जो समय और परिस्थिति की माँग है। विकास प्रशासन की प्रकृति के केन्द्र-बिन्दु हैं—परिवर्तनशीलता, लचीलापन, नियोजित प्रशासन, सहभागिता, उत्तरदायित्व, प्रगतिशीलता और लक्ष्योन्मुखी, आदि।

क्षेत्र (Scope)

विकास प्रशासन लोक प्रशासन की एक नवीन और विस्तृत शाखा है। इसका जन्म विकासशील देशों की नयी-नयी प्रशासनिक योजनाओं तथा कार्यक्रमों को लागू करने के सन्दर्भ में हुआ है। सामान्य तौर से विकास से सम्बन्धित कार्य विकास प्रशासन के क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। वैसे यह भी कहा जाता है कि विकासशील देश में सब प्रशासन विकास प्रशासन ही है। विकास प्रशासन के क्षेत्र में वे समस्त गतिविधियाँ सम्मिलित हो जाती हैं जो सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, औद्योगिक तथा प्रशासनिक विकास से सम्बन्धित हों एवं सरकार द्वारा संचालित की जाती हो। विकास प्रशासन से सम्बन्धित साहित्य में विकास प्रशासन का दो अर्थों में प्रयोग किया गया है—(अ) यह विकास के कार्यक्रमों में प्रशासन के रूप में देखा गया है, और (ब) प्रशासन की क्षमता को बढ़ाने के रूप में इसका प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि विकास प्रशासन वह प्रशासन है जो विकास हेतु किये जाने वाले समस्त कार्यक्रमों, नीतियों, योजनाओं आदि के निर्माण और क्रियान्वयन से सम्बन्धित है। इसके साथ ही साथ प्रशासन विभिन्न समस्याओं को सुलझाने हेतु अपनी क्षमता एवं कुशलता को भी बढ़ाता है। संक्षेप में जिस प्रकार विकास के क्षेत्र को किसी निर्धारित सीमा में नहीं बाँधा जा सकता उसी प्रकार विकास प्रशासन के क्षेत्र को भी किसी निर्धारित सीमा के अन्तर्गत अथवा शीर्षक के अन्तर्गत लिपिबद्ध करना सम्भव नहीं है। फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिए विकास प्रशासन के क्षेत्र को निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत अध्ययन किया जा सकता है :

1. **पोस्डकार्ब सिद्धान्त**—चूँकि विकास प्रशासन लोक प्रशासन का ही विस्तृत अंग है इसलिए लूथर गुलिक द्वारा व्यक्त किया गया पोस्डकार्ब सिद्धान्त विकास प्रशासन के क्षेत्र के लिए प्रासंगिक है। यह शब्द निम्नलिखित शब्दों से मिलकर बना है : Planning (नियोजन), Organization (संगठन), Staffing (कर्मचारी), Direction (निर्देशन), Coordination (समन्वय), Reporting (प्रतिवेदन) तथा Budgeting (बजट)। ये समस्त सिद्धान्त लोक प्रशासन के लिए आवश्यक हैं। विकास प्रशासन के क्षेत्र में योजनाओं का निर्माण करना, अधिकारियों एवं अन्य सेवीवर्गों का संगठन बनाना, कर्मचारियों की शृंखलाबद्ध व्यवस्था करने का कार्य सम्मिलित है ताकि प्रत्येक कर्मचारी द्वारा सम्पादित किये जाने वाले कार्यों के सम्बन्ध में उन्हें सत्ता प्रदान की जा सके तथा उन्हें कार्य के सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश दिये जा सकें। इसमें समन्वय का भी महत्वपूर्ण अधिकार सम्मिलित है। विभिन्न अधिकारियों और कर्मचारियों को सौंपे गये कार्यों के मध्य समन्वय स्थापित करना मुख्य कार्य है ताकि कार्यों के दोहराव को रोका

जा सके। विकास प्रशासन के क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की सूचनाओं और आँकड़ों के आधार पर प्रतिवेदन प्रस्तुत करना पड़ता है। प्रशासन चाहे लोक प्रशासन हो या विकास प्रशासन, बजट की व्यवस्था और निर्माण दोनों के लिए आवश्यक है।

2. **प्रशासनिक सुधार एवं प्रबन्धकीय विकास**—इन दोनों का विकास प्रशासन में अत्यन्त महत्व होता है, इसलिए प्रशासनिक सुधार एवं प्रबन्धकीय विकास पर अधिक ध्यान दिया जाता है। प्रशासकीय और विकासात्मक संगठनों में संगठनात्मक और प्रक्रियात्मक सुधारों की हमेशा आवश्यकता पड़ती है। प्रशासकीय सुधार का मुख्य उद्देश्य है जटिल कार्यों और प्रक्रियाओं को सरल बनाना तथा उन नियमों का निर्माण करना जिनसे कम से कम श्रम एवं धन व्यय करके अधिकतम उत्पादक परिणाम प्राप्त किये जा सकें। इसके लिए समय-समय पर विभिन्न आयोग एवं समितियाँ गठित की जाती हैं तथा प्रशासनिक सुझाव के सम्बन्ध में इनके प्रतिवेदन माँगे जाते हैं। प्रतिवेदनों में सुझाये गये मुद्दों पर विचार कर उन्हें लागू करवाना विकासात्मक प्रशासन का प्रमुख कार्य हो गया है। इस प्रकार नवीन तकनीकी और प्रक्रियात्मक विकास पर अत्यधिक बल देना विकासात्मक प्रशासन का कर्तव्य बन जाता है।

3. **लोक-सेवकों की समस्याओं का अध्ययन**—विकास प्रशासन को नवीन योजनाओं, परियोजनाओं, विशेषीकरण तथा जटिल प्रशासनिक कार्यक्रमों को लागू करना पड़ता है। ऐसे कार्यों को सम्पन्न करने के लिए विकास प्रशासन को अनुकूल लोक-सेवकों की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए लोक-सेवकों के प्रशिक्षण हेतु विभिन्न प्रकार के विशेषीकृत प्रशिक्षण संस्थानों में भेजा जाता है, जहाँ उन्हें प्रशासकीय समस्याओं और संगठनात्मक प्रबन्ध आदि के सम्बन्ध में जानकारी दी जाती है। इस प्रकार समय के साथ बदली हुई आधुनिक परिस्थितियों के अनुकूल लोक-सेवकों की भर्ती, प्रशिक्षण, चयन सेवा सम्बन्धी शर्तों, आदि समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

4. **नवीनतम प्रबन्धकीय तकनीक का प्रयोग**—विकास प्रशासन का एक महत्वपूर्ण कार्य उन नवीन प्रबन्धकीय तकनीकी की खोज करना है जिनसे विकास कार्यक्रमों में कार्यकुशलता बढ़ायी जा सके। इस सम्बन्ध में विकसित देशों में अपनाये जाने वाले नवीन प्रबन्धकीय तरीकों को लागू करना चाहिए। विकासात्मक प्रशासन में प्रबन्ध के क्षेत्र में नवीन चुनौतियाँ सामने आती रहती हैं। उन चुनौतियों से कैसे तथा किस तरीके से निबटा जाय, यह विकासात्मक प्रशासन के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, क्योंकि बिना उचित और आधुनिक प्रक्रिया के नवीन और आधुनिक चुनौतियों का सामना सम्भव नहीं है।

5. **कम्प्यूटर प्रणाली का प्रयोग**—कम्प्यूटर विकासशील देशों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका और सहयोग प्रदान कर सकता है। प्रशासकीय प्रबन्ध तथा प्रशासकीय विकास के लिए प्रक्रिया के क्षेत्र में यह वरदान सावित हो रहा है। आज विकासशील देश में प्रशासन को कम्प्यूटर प्रणाली का प्रयोग करना पड़ रहा है। डाटा प्रोसेसिंग के मामले में तो इसकी उपयोगिता अत्यन्त प्रभावकारी सिद्ध हो रही है। कम्प्यूटर प्रणाली को विकास प्रशासन के क्षेत्र में अब सम्मिलित कर लिया गया है।

6. **मानवीय तत्व का अध्ययन**—विकास प्रशासन के विकास में मानवीय तत्व का अध्ययन अपरिहार्य है। मानव ही समस्त प्रशासकीय व्यवस्था का संचालक, स्रोत, आधार और मार्गदृष्टा है। प्रशासन पर परम्पराओं, सभ्यता, संस्कृति, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, बाह्य वातावरण का प्रभाव पड़ता है। इन सबका सम्बन्ध मानव से होता है। अतः विकास प्रशासन में विविध समस्याओं को हमें मानवीय व्यवहार के परिवेश में देखना चाहिए। इस प्रकार हम इसके अन्तर्गत सामाजिक मानक, मूल्यों, व्यवहार, विचारों आदि का अध्ययन करते हैं।

7. **बहुआयाम विषय**—विकास प्रशासन में विकास को सर्वोच्चता प्रदान की जाती है और इसमें समस्त क्षेत्रों जैसे, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में परिवर्तन, कृषि, प्रगति एवं विकास किया जाता है। आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक ढाँचे का विकास करना विकास प्रशासन के क्षेत्र का चुनौती भरा कार्य होता है। वस्तुतः ये कार्य विकास प्रशासन की रीढ़ होते हैं। परम्परागत संरचनाओं की कमियों और प्रक्रियाओं का सुधार कर उनकी जगह नवीन प्रकार के आर्थिक व सामाजिक ढाँचे का निर्माण करना विकास प्रशासन के समक्ष एक चुनौती भरा कार्य बन जाता है। गतिशील और परिवर्तनशील संरचनाओं को अगर ऐसे ही छोड़ दिया तो समय और परिस्थिति के बहाव की प्रक्रिया में पीछे रह जाती है। ये संरचनाएँ आधुनिक चुनौतियों का सामना करने के अनुकूल नहीं रह पाती हैं। अतः इन संरचनाओं का विकास व सुधार आवश्यक हो जाता है। भारत के आर्थिक विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ स्वीकार की गयी हैं। समाजवादी लोककल्याणकारी अवधारणा के अनुसार गरीब और अमीर के बीच पायी जाने वाली असमानता को पाटने के लिए नौकरियों में आरक्षण का प्रावधान किया गया है। लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण के लिए पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत किया गया है और उन्हें सत्ता प्रदान की गयी है। इस प्रकार विकास प्रशासन के क्षेत्र में आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक ढाँचे का विकास करना महत्वपूर्ण कार्य है।

विकास प्रशासन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य ग्रामीण एवं शहरी विकास के कार्यक्रमों को लागू करना है। ग्रामीण क्षेत्र में सिंचाई के पानी की व्यवस्था, सड़कों का निर्माण, अस्पतालों का निर्माण, पेयजल सुविधाएँ, सामुदायिक विकास योजनाएँ, रोजगार के कार्यक्रम, लघु कुटीर उद्योग, आधुनिक तकनीकी का उपयोग तथा लोककल्याणकारी कार्यों को जनता तक पहुँचाना विकास प्रशासन का अंग बन गया है। इसी प्रकार शहरों में विकास के अनेक कार्यक्रम लागू किये जाते हैं, जैसे—आवासीय समस्या को हल करने के लिए आवासीय योजनाएँ, पीने के पानी की व्यवस्था, टेलीफोन, तार, संचार तथा आवागमन की सुविधाएँ, प्रदूषण नियन्त्रण की समस्याएँ आदि।

8. **जन-सहभागिता**—विकास प्रशासन में जन-सम्पर्क तथा जन-सहभागिता का विशेष महत्व है। विकास कार्यक्रम जनता के हित के लिए होते हैं इसलिए जन-सहयोग प्राप्त करना आवश्यक होता है। इनके अभाव में विकास कार्यों में सफलता प्राप्त करना सम्भव नहीं है। वस्तुतः जन-सम्पर्क से यह जानने का प्रयास किया जाता है कि जन-कल्याण के लिए विकास के जो कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं उसका कितना लाभ आम जनता तक पहुँचता है तथा जनता की इस कार्यक्रम के सम्बन्ध में क्या प्रतिक्रिया है। इस प्रकार जन-सम्पर्क और जन-सहयोग विकास प्रशासन की एक आवश्यक शर्त है।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त विकास प्रशासन के क्षेत्र में क्षेत्रीय परिषदें, सामुदायिक सेवाएँ, प्रबन्ध कार्यक्रम, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आदि का भी अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार जैसे-जैसे विकास सम्बन्धी कार्यक्रम बढ़ते जाते हैं, विकास प्रशासन का क्षेत्र भी व्यापक होता जाता है।

विकास प्रशासन के अध्ययन का महत्व (Importance of Development Administration)

विकास प्रशासन के महत्व को समझने के लिए दो बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है—सिद्धान्त-निर्माण और विकास प्रशासन। ये दोनों परस्पर जुड़े हुए हैं। तुलनात्मक लोक प्रशासन में सिद्धान्त-निर्माण का अधिकांश कार्य विकास से जुड़ा है, जबकि विकास प्रशासन का अध्ययन सिद्धान्त-निर्माण से जुड़ा है। इस प्रकार सिद्धान्त और विकास और विकास का सिद्धान्त

साथ-साथ आगे बढ़े हैं। यह आपसी निर्भरता समझने योग्य है, क्योंकि तुलनात्मक लोक प्रशासन का क्षेत्र मुख्य रूप से विकास का विभिन्न स्थितियों से कार्यरत राष्ट्रों की प्रशासनिक प्रणालियों की तुलना से सम्बन्धित है। यह स्वीकार किया जा चुका है कि इसमें केन्द्रीय चिन्तन का विषय लेने से विकास प्रशासन का अध्ययन तुलनात्मक लोक प्रशासन में विद्यमान प्रायः सभी अभिगमों का मिलन-बिन्दु हो सकता है। ऐसा इसलिए सम्भव है क्योंकि विकास प्रशासन के विचार को विस्तृत दृष्टिकोण से देखा जाता है तथा इसे केवल विकासशील देशों पर केन्द्रित कर सीमित नहीं रखा जा सकता।

विकास प्रशासन और परम्परागत प्रशासन
[DEVELOPMENT ADMINISTRATION & TRADITIONAL ADMINISTRATION]

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद स्वतन्त्र हुए तृतीय विश्व के देशों के सम्मुख नवीन समस्याएं और चुनौतियाँ आने लगीं। यह अनुभव किया जाने लगा कि इन नवीन और आधुनिक समस्याओं का सामना करने के लिए प्रभावशाली सिद्धान्तों और प्रशासनिक कार्यक्रमों को लागू किया जाना चाहिए, क्योंकि इनकी पृष्ठभूमि में लोक प्रशासन के परम्परागत सिद्धान्तों की उपयोगिता संदिग्ध बन गयी थी तथा लोक प्रशासन के परम्परागत विचारकों की अवधारणाएं अब सामयिक नहीं रह गयी थीं। इस सम्बन्ध में **प्रो. रिग्स** ने लिखा है कि परम्परागत लोक प्रशासन का साहित्य, प्रशासनिक आचरण तथा उसके पर्यावरण के पारस्परिक सम्बन्धों को स्पष्ट करने में असमर्थ है। अतः नवीन अवधारणा के तहत लोक प्रशासन के नवीन आयामों के रूप में विकास प्रशासन अस्तित्व में आया।

कानून एवं व्यवस्था को बनाये रखना ही परम्परागत प्रशासन का मुख्य कार्य था। उस समय लोककल्याण से सम्बन्धित कार्यों के विषय में सरकार की सूची बहुत-ही नकारात्मक होती थी और प्रायः कल्याणकारी दायित्व गैर-सरकारी रूप से व्यक्ति, परिवार और समाज ही पूरा करते थे। कानून और व्यवस्था विकास एवं कल्याण के लिए अत्यन्त आवश्यक है। फिर भी परम्परागत प्रशासन में विकास की चिन्ता तो की जाती थी परन्तु उनका दृष्टिकोण नकारात्मक था तथा वह मुख्य रूप से प्रतिरोधों को हटाने में रुचि लेता था। इसके विपरीत, विकास प्रशासन समाज में विकास और कल्याण को प्रोत्साहन देने के लिए अधिक प्रयत्नशील रहता है। इसके लिए वह तकनीकी विकास, वित्तीय सहयोग तथा प्रशासनिक सुधार करके जनता को अधिक सुविधा पहुँचाने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

परम्परागत प्रशासन में जन-सहयोग तथा जन-सम्पर्क को अपेक्षित कम महत्व दिया जाता था। आम जनता का सीधा सम्पर्क प्रशासन से नहीं होता था। केवल प्रार्थना-पत्र के माध्यम से ही जनता प्रशासन से सम्पर्क स्थापित करती थी। प्रशासनिक दृष्टि से जनसाधारण को अपील अथवा याचिका के अतिरिक्त कोई अधिकार नहीं था। परन्तु विकास प्रशासन इस बात के लिए सजग है कि इसका अस्तित्व एवं औचित्य आम जनता के कल्याण और सेवा पर ही निर्भर है। वे जानते हैं कि निर्णायक सत्ता अब जनता के हाथों में है। जनता ही इस बात को तय करेगी कि कौन-से कार्यक्रम और विचार उनके लिए उपयोगी हैं और कौन-से अनुपयोगी।

परम्परागत प्रशासन में नियमों, विनियमों एवं आदर्शों का पर्याप्त रूप से 'लकीर का फकीर' बनकर पालन किया जाता था। सब कुछ औपचारिक और नियमानुसार था। चाहे परिस्थिति जो कुछ भी हो, बस नियम का पालन आवश्यक है। इसमें अनौपचारिक तत्व की उपेक्षा की जाती थी। इसके विपरीत विकास प्रशासन में अनौपचारिक और लचीला दृष्टिकोण